RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

तुलसीदास और उनकी कलियुग की अवधरणा

Binita Srivastav

Research Scholar, Delhi University

गोस्वामी तुलसीदास जी का उदय जिस कालखण्ड में हुआ था, उस समय की सामाजिक सांस्कृतिक, धर्मिक और पारिवारिक स्थितियाँ किसी भी प्रकार से सुखद तो क्या, ग्राह्य नहीं थी। चारों ओर मर्यादाहीनता, गृहकलह, धर्मिक पाखण्ड अनैतिकता परिवार से लेकर समाज में पफैली हुई थी। मानवीय सम्बन्धें की बुनियाद टूट रही थी। वेदविहित शास्त्रा ज्ञान का तिरस्कार हो रहा था। वर्णाश्रमधर्म्म की मान्यताएँबिखर रही थी। यही कारण है कि विघटनात्मक क्रिया–प्रतिक्रिया सारे भारतीय समाज औरघरों में सक्रिय थीं। जर, जोरू और जमीन के लिए लड़ते–झगड़ते भाई–भाई, बाप–बेटा आदि पारिवारिक सम्बन्धें के मूल्य क्षीण हो रहे थे।

''लोकमर्यादा का उल्लंघन, समाज की व्यवस्था का तिरस्कार, अनध्किार चर्चा, भक्ति और साधुता का मिथ्या दखल, मूर्खता छिपाने के लिए वेदशास्त्रा की निंदा–ये सब बातें ऐसी थी जिनसे गोस्वामी जी की अंतरात्मा बहुत व्यथित हुई।[i] गोस्वामी तुलसीदास जी ने समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए वर्णाश्रमधर्म्म को प्रमुख आधर माना है। लेकिन उनके द्वारा जिस समाज का जीवंत चित्राण किया जा रहा है उसी सामंती समाज में लोग वर्णाश्रमधर्म्म की खुलेआम उल्लंघन कर रहे हैं, वेदविहित शास्त्राों, पुराणों में बताए ज्ञान से लोग विमुख हो रहे हैं। वर्णाश्रमधर्म्म और वेदों–पुराणों में बताए गए नियमों का पालन न होने कारण तुलसी ने इसे कलियुग की संज्ञा दी है, जहाँ लोग अपने निर्धरित कर्तव्यों से विमुख होकर जीवन जी रहे हैं। तुलसीदास जी का मानना था कि कलियुग में लोग निरंतर वर्णाश्रमधर्म्म के नियमों का उल्लंघन कर रहे थे जिससे समाज में पापाचार, अन्याय, अनैतिकता का बोलबाला था। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के प्रारम्भ और अंत में तथा 'कवितावली' में विशेष रूप से कलियुग का उल्लेख विविध प्रकार से किया है। ''रामकथा लिखते समय तुलसीदास ने अपने युग की विशेषताओं को नहीं भूलते। उन्होंने कलियुग के वर्णन के रूप में अपने युग अर्थात् 16वीं–17वीं शताब्दी के भारत विशेषतः हिन्दी भाषी क्षेत्रा का ही वर्णन किया है। रामकथा का महात्म्य बताते हुए यह बात उन्होंने बार–बार कही है कि वह कलियुग के दुष्प्रभाव को दूर करने वाली है।''[ii]

''कलियुग हिन्दू पुराणों में अपनी बुराइयों के लिए बहुत बदनाम है। यह पाप युग का प्रतीक बनकर लगभग एक अवधरणा बन गया है। लेकिन तुलसीदास जब कलियुग का उल्लेख करते हैं तब वे पौराणिक कलियुग का नहीं करते हैं बल्कि अपनी आँखों से देखे उस समाज का वर्णन करते हैं जो अनेक प्रकार के पाप, ताप, दोष और दरिद्रता से पीड़ित है। तुलसीदास सामंतीव्यवस्था के पोषक हैं या नहीं, नारी निंदक है या नहीं–यह सब विवादास्पद हो सकता है। जो बात निर्विवाद है वह यह है कि तुलसी 'मानवीय करुणा के अन्यतम कवि है और कवि होने का अर्थ यह है कि वो जो कुछ देखते हैं उसका शब्दों के माध्यम से मार्मिक चित्राण कर सकते हैं, तुलसी कलियुग के नाम पर अपने समाज का जो वर्णन करते हैं वह विशिष्ट दृश्यों और घटनाओं से युक्त है।'[iii] कलियुग की दारुण स्थिति के चित्रा तो विशेष रूप से सामान्य जन की चिंतना के प्रतिबिम्ब है। कलियुग वर्णन के क्रम में तुलसी दास ने उस समाज का विस्तार से उल्लेख किया है जिस समाज को जिया और देखा है। मर्यादावाद नैतिकता के समर्थक थे और चाहते थे कि समाज में इसका अनुकरण किया जाये लेकिन तुलसी के समय में समाज, धर्म से लेकर परिवार व नजदीकी सम्बन्धें के बीच नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा था।जिन्होंने देखा कि समाज में धर्म का ह्रास हो रहा, धर्मिक पाखण्ड को बढ़ावा मिल रहा है। सभी धर्म के लोग अपने कर्तव्य से विमुख हो गये है–

कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भर सदग्रंथ,
दभिन्ह निजमति कल्पि करि प्रगट किए बहुपंथ।[iv]

;अर्थात् कलियुग के पापों ने सबधर्मों को ग्रस लिया है। सद्ग्रन्थ लुप्त हो गए। दम्भियों ने अपनी बुि(से कल्पना करके बहुत से पंथ विकसित कर लिए है। तुलसी के अनुसार कलियुग का सबसे बड़ा लक्षण है–कपट और मिथ्या आचरण। सब लोग स्वच्छन्द आचरण करते हैं जो ज्यादा गाल बजाता है वहीं पण्डित माना जाता है, जो मिथ्या दम्भ में रत हैं, वहीं संत कहलाते हैं–

मारग सोइ जा कहुँ जोइ भावा। पण्डित सोइ जो गाल बजावा।
मिथ्यारम्भ दम्भ रत जोई। ता कहुँ संत कहइ सब कोई[v]

व्यक्तिगत चरित्रा का पतन हो रहा था, जो जितना झूठ बोलता है और हंसी मजाक करता है वह उतना ही कलियुग में गुणवान कहा जाता है–

जो कह झूँठ मसखरी जाना,
कलियुग सोइ गुनवंत बखाना[vi]

जो आचरण हीन है और वेदमार्ग को छोड़े हुए है, कलियुग में वहीं ज्ञानी और वही वैराग्यवान है–

निराचार जो श्रुतिपय त्यागी, कलियुग सोइ ग्यानी सो विरागी।[vii]

तुलसीदास ने कलियुग वर्णन प्रसंग में उल्लेख किया है कि कैसे 'अर्थ' ;ध्नद्ध सभी अनर्थो का केन्द्र बनी हुई है। लोभवश लोग अपने आत्मीय सम्बन्धें की परवाह नहीं करते, उन्हें ठगने, धेखा देने आदि से संकोच नहीं करते है।[viii] तभी गुरू जो पूजनीय होता है, शिष्य का ध्न हरण करने में तनिक भी संकोच नहीं करते हैं यहाँ तक मां–बाप भी बच्चों को शिक्षा संस्कार व चरित्रा निर्माण के लिए नहीं दे रहे हैं वरन् जीविकोपार्जन व पेट भरने मात्रा का साध्न बनाने की सीख दे रहे हैं।[ix]लोग लोभवश अपनी इच्छाओं पर नियंत्राण नहीं रख

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पाते हैं। कौड़ियों के लिए ब्राह्मण और गुरु की हत्या करने में नहीं चूकते हैं–

कौड़ी लागि लोभ बस करहिं विप्रगुरु घात[x]

सुंदरकाण्ड में भी तुलसी अर्थ विषयक लोभ को नरक का पंथ घोषित किया है और अर्थ को समस्त बुराईयों की जड़ और सामाजिक विषमता का केन्द्र माना है।

तुलसीदास ने जिस समाज का वर्णन किया है वह उनके समय का समाज हैं, जिसको देखा और समझा है। उन्होंने देखा कि लोग खुलेआम वर्णव्यवस्था का उल्लंघन कर रहे हैं अपने कर्तव्य से च्युत होकर समाज में अव्यवस्था को बढ़ावा दे रहे हैं। कलियुग में न वर्णधर्म का पालन हो रहा है, न ही आश्रम व्यवस्था का। सभी स्त्री पुरुष वेदों का उल्लंघन कर रहे हैं। यहाँ तक कि ब्राह्मण, जिसका कर्तव्य पठन–पाठन है वह भी अपने धर्म से विमुख होकर वेदों को बेचने वाला बन गया है–

वरन धर्म नहिं आश्रमचारी। श्रुति विरोध रत सब नर नारी।

द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन। कोउ नहिं मान निगम अनुसासन।[xi]

तुलसीदास ने सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने के लिए वर्णव्यवस्था के पालन पर लगातार जोर दिया है– इस विषय में तुलसीदास कुछ ऐसी बाते कह जाते हैं जिन्हें हम आज स्वीकार नहीं कर सकते है। निस्संदेह तुलसीदास वर्णव्यवस्था को एक जीवन और सामाजिक मूल्य के रूप में स्वीकार करते हैं लेकिन वे किसी शूद्र की निंदा इस आधर पर नहीं करते कि वह शूद्र है, बल्कि इसलिए करते हैं कि उसने अपना कर्म छोड़ रखा है। अपना कर्म छोड़ने वाला समान रूप से निंदनीय है, चाहे वह शूद्र हो या ब्राह्मण[xii] शूद्र इसलिए निंदनीय है कि वे स्त्री के मर जाने पर या सम्पति के नष्ट हो जाने पर मूड़ मुड़ाकर संन्यासी हो गए हैं, इस प्रकार संन्यास का नाम बदनाम करते पिफरते हैं–

नारी मुई गृह सम्पति नासी, मूड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी।[xiii]

कलियुग में चारों ओर मनमाना पन है, घोर अनीति प्रचलन में है–

सब नर कल्पित करहिं अचारा, जाइ न बरनि अनीति अपारा।।[xiv]

ब्राह्मण भी यजन–याजन, पठन–पाठन छोड़कर, अनपढ़, लालची और कामी विलासी हो गए हैं। उनमें कहीं भी, किसी प्रकार का कोई आचार–विचार नहीं रह गया है।[xv]

कलियुग में सभी लोगों ने अलग–अलग आचार–व्यवहार कल्पित कर लिए है। इस प्रकार चारों ओर जिस प्रकार की अनन्त अपार अनीतियों का प्रचार–प्रसार हो रहा है, उसका सबका वर्णन कर पाना असम्भव है। अलग–अलग मार्गो पर चलकर अलग–अलग ढंग से कलियुग के सभी लोग वर्णसंकर हो गए है। वे लोग तरह–तरह के पाप करते हैं बदले में अनेक प्रकार के रोगों को झेलते है।[xvi] वेदशास्त्रों द्वारा अनुमोदित भगवान की भक्ति का जो मार्ग है मोह वश में पड़कर उससे दूर हट गए है।[xvii]

कलियुग का प्रभाव ऐसा है कि जीवन के नियम ही सारे उलट–पुलट गए है। योगी संन्यासी कहलाने वाले लोग अनेक प्रकार के छलकपट में संलिप्त है। विषय–वासनाओं ने उनकी चेतना को हर लिया है और उनमें वैराग्यपन की भावना का नामोनिशान नहीं है।[xviii] इस समय जिसे ध्नी होना चाहिए, वह निर्ध्न है। संन्यासी ध्नी हो गए है और गृहस्थ गरीब हो गए है और राजा अत्याचारी हो गए, वे प्रजा को दण्डित करते हैं और नित्य उसकी दुर्दशा करते हैं–

तपसी ध्नवंत दरिदगृही, कलिकौतुक तात न जात कही।

नृप पाप परायन ध्र्म नहीं, करि दण्ड विडम्ब प्रजा नितही।[xix]

तुलसी अपने समाज से क्षुब्ध थे। कलियुग वर्णन करते हुए यह देखकर वे चिंतित है कि यती संप्रति प्रपंचरत है, ब्रह्मचारी गुरु आज्ञा से दूर हो गए है, वैश्य कृपण हो गए, शूद्र बहुत बाचाल हो रहे हैं, जन–सामान्य अपकारी, निर्दय और छली है। गृहस्थ लोग अतिथि वंचक है, अर्थात् सारा सामुदायिक जीवन अस्त–व्यस्त और संत्रास्त्रा है।[xx]

''... राग मोहमद लीलि लयी है।

प्रजा पतित पाखण्ड पाप रत बढ़ी कुरीति कपट कलई है।

सीदति साधु साधुता सोचति, खल बिलसत, हुलसत खलई है

;विनयपत्रिाका, पृष्ठ 193द्ध

तुलसी ने अपने समकालीन समाज की विकृतियों को बहुत निकट से देखा था। अपने लम्बे जीवन में वे कई परिस्थितियों के बीच गुजरे थे। उन्होंने देखा कि अध्कितर नर–नारी मोहग्रस्त है। वे मिथ्याचारों में पफँसे हुए है–

सब नर कल्पित करहिं अचारा, जाय न बरनि अनीति अपारा।[xxi]

उत्तरभारत का मध्ययुगीन–मध्यवर्गीय समाज जिस प्रकार अपने पूर्णघोषित आदर्शो के विपरीत आचरण कर रहा था, उसका विवरण देते हुए गोस्वामी जी प्रकारांतर से भगवान के इस कथन की ओर दृष्टि कर रहे हैं कि द्वापर के राक्षस कलियुग में ब्राह्मण होकर प्रकट हुए। अंतर केवल इतना है कि 'भागवत' में भूतकालिक कलियुग का वर्णन हुआ है जबकि गोस्वामी जी ने भावी कलियुग का उल्लेख किया है।[xxii]

शिक्षा के क्षेत्रा में किस तरह अराजकता व्याप्त थी। इसका वर्णन भी गोस्वामी जी बड़े सुंदर दृष्टांतो का प्रयोग करके किया है। गुरु–शिष्य का सम्बन्ध बध्रि अंध कर लेखा[xxiii] जैसा हो गया है। गुरु रूप में चारों तरपफ कालनेमि तथा कपट मुनि छाए हुए है। गुरु शिष्यों का शोषण कर रहे हैं–

हरहिं सिष्य ध्न सोक न हरई।[xxiv]

कवियों की संख्या तो निरंतर बढ़ रही है किन्तु उन कवियों को कोई आश्रय देने वाला नहीं है। गुण में दोष लगाने वाले बहुत है, पर गुणी कोई भी नहीं है।सामंती संस्कारों के कारण समाज का शील नष्ट–भ्रष्ट हो गया है। एक पत्नीव्रत और पतिव्रत दोनों नष्टप्राय हैं–

गुन मंदिर सुन्दर पति त्यागी, भजहिं नारि पर पुरुष सभागी।[xxv]

अर्थात् अभागिनी स्त्रियाँ गुणों के धम सुंदर पति को छोड़कर पर पुरुष को सेवन कर रही हैं। दूसरी ओर भोगी, भ्रष्ट, कामी दम्भी, पुरुष, समाज में परकीयाओं, गणिकाओं के साथ रहने में शान–शौकत समझते हैं जबकि सती कुलवती स्त्रियों को घर से निकाला जाता है–

कुलवन्त निकारहिं नारिसती, गृह आनहिं चेरि निबेरि गती।[xxvi]

तुलसी 'मानस' शूर्पणखा जैसी स्वच्छन्द स्त्राी की घोर निंदा करते हैं वहीं मंथरा जैसी चुगलखोर स्त्राी से दूर रहने की बात करते हैं।पारिवारिक सम्बन्ध इस तरह बिखर रहे हैं कि पुत्रा तभी तक अपने माता–पिता का सम्मान करते हैं जब तक स्त्राी का मुँह नहीं देखते।[xxvii] जबसे ससुराल प्यारी लगने लगी, तबसे कुटुम्बी शत्राुरूप हो गए है।[xxviii] कलियुग ने मनुष्य को बेहाल कर डाला। कोई निकट सम्बन्ध यानी बहन–बेटी की परवाह नहीं करता। लोगों में न तो किसी प्रकार का संतोष है और न विवेक। जाति–कुजाति सभी लोग भीख माँगने वाले बन गए है।[xxix]

तुलसी जिस युग में जी रहे थे वह युग मुगलकालीन युग था। उफपरी तौर पर भले मुगलकाल ;अकबर का कालद्ध समृ(का काल माना जाता है लेकिन इस काल में भी आमजनता का जीवन कष्टकारी था। अनेक क्षेत्राीय राजा भी इस समय शासन कर रहे थे। आमजनता में उनका जनाधर नहीं था। वे अकारण प्रजा को बिना किसी अपराध के दण्ड दिया करते थे। इसका तुलसी ने बखूबी उल्लेख किया है–

नृप पाप परायन ध्र्म नहीं।
करि दण्ड विडम्ब प्रजा नितही।[xxx]

इस तरह तुलसी 'कलियुग' वर्णन के तहत समाज क्या राजनीति के छद्म को उजागर रख देते हैं जहाँ राजनीति और शासक अराजक होंगे वहाँ जनता को अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं।

अपनी आँखों से देखे कलियुग अर्थात् अपने समाज का वर्णन तुलसीदास ने 'कवितावली' में जमकर किया है। कवितावली में 'कलियुग वर्णन' नाम से जो अंश है उसमें ही अकाल–वर्णन, महामारी का वर्णन भी है। इस सबसे तुलसी के समकालीन समाज की आर्थिक विपन्नता, विषमता और दुरावस्था पर प्रकाश पड़ता है। विश्वनाथ त्रिापाठी का मानना है कि ''जहाँ रामचरितमानस में कलियुग वर्णन पौराणिक कथा के रूप में एकपात्रा से करवाया है किन्तु कवितावली में तो तुलसीदास ने खुले तौर पर अपने समाज की विषमता का चित्राण किया है। 'रामचरितमानस' में सामाजिक आचार–भ्रष्टता और वर्णाश्रम–व्यवस्था के शिथिल हो जाने का अध्कि रोना रोया है जबकि कवितावली में दरिद्रता और अकाल का चित्राण अध्कि है।''[xxxi]

कलियुग में बार–बार अकाल पड़ने से लोग भूखों मर रहे हैं।[xxxii] तुलसीदास अकाल से उपजे संकट का विस्तार से वर्णन किया। उनका मानना था कि लोगों ने यज्ञ, कर्म, ध्र्म आदि तामसभाव से करते हैं इसीलिए दैव जल नहीं बरसाते और बीज बोने से ध्रती पर धन नहीं उगते।[xxxiii] कलिकाल ने लोगों का हाल बेहाल कर दिया है।

कलिकाल में दरिद्रता, दुर्भिक्ष, दुख और कुशासन दिनोदिन–दूने होते जा रहे हैं, सुख और अच्छे कार्य घटते जा रहे हैं।[xxxiv]

दिन–दिन दूनों देखि दारि(दुकाल, दुखु
दुरितु, दुराज सुख–सुकृत संकोच है।[xxxv]

कलियुग में किसानों की खेती पूरी नहीं उपजती, अकाल प्रबल है, इसलिए भिक्षुओं को भीख नहीं मिलती है।बनियों को व्यापार में उचित लाभ नहीं होता है, नौकरी चाहने वाले को नौकरी नहीं मिलती है। इस प्रकार जीविकाविहीन होकर लोग दुखित हो रहे हैं शोकग्रस्त होकर वे आपस में कहते हैं कि कहाँ जाय और क्या करें। इसीलिए तुलसीदास कहते हैं कि दरिद्र रूपी रावण ने संसार को दबा लिया है–

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
ग ग ग
दारिद्र–दसानन दवाई दुनो दीनबन्धु।
दुरित–दहन देखि तुलसी हहा करी।।[xxxvi]

किसान, मजदूर, भिक्षुक, भाट, चाकर जादूगर आदि लोग पेट के लिए अनेक प्रकार की कला करते हैं। पेट के लिए ही बेटा–बेटी बेचते हैं। यह पेट इतना बड़ा है कि इसकी आग ध्नश्याम से ही बुझ सकती है ;राम सेद्ध पेट की आग बडवाग्नि से भी बड़ी है।[xxxvii]

कलियुग का विस्तार से वर्णन करने के क्रम में तुलसी इस बुराई से बचने के लिए उपाय भी बताते हैं। वे कहते हैं कि 'राम की कथा' कलियुग की बुराई दूर करने वाली है, वह कलियुग रूपी साँप के लिए मोर के समान है, विवेक की आग को प्रजवलित करने वाली लकड़ी के समान है।[xxxviii] वे सत्संग, रामकथा और रामनाथ का माहात्म्य बताते हुए प्रायः सर्वत्रा कह देते हैं कि इससे कलियुग का दुष्प्रभाव दूर होता है। तुलसी के अनुसार संत्संग तीर्थराज प्रयाग के समान है। जिसमें विध्ि–निषेध से युक्त कर्मो की कथा कलियुग के पापों को हरने वाली यमुना के रूप में प्रवाहित हो रही है–

मुद मंगलमय संतसमाजू, जो जग जंगम तीरथराजू।
विध्ि निषेध्मय कलिमल हसी, रामकथा रविनंदनि बरनी।[xxxix]

तुलसीदास जी का मानना है कि जहाँ द्वापर, त्रोता, सतयुग में पूजा, यज्ञ, योग से मुक्ति मिलती है। वहीं कलियुग में बिना किसी परिश्रम से भववंघन से छुटकारा मिल सकता है। कलियुग में महज 'राम' नाम के स्मरण से जीवन चक्र से छुटकारा मिल सकता है–

जो गति होइ सो, कलिहरि नाम से पावहिं लोग।[xl]

श्री हरि की गुणगाथाओं का गान करने से ही मनुष्य भवसागर की थाह पा जाते हैं–

कलियुग केवल हरिगुन गाह्य।[xli]

तुलसी ने राम के लिए 'गरीबनेवाज' शब्द का प्रयोग किया है क्योंकि उनका मानना था कि एकमात्रा 'राम' ही है जो सभी के कष्टों को दूर करने वाले, गरीबों के रक्षक है–

राम गरीबनेवाज! भये हो,
गरीबनेवाज, गरीब नेवाज़ी।।[xlii]

इन प्रकार स्पष्ट है कि तुलसी ने कलियुग वर्णन के माध्यम से अपने समाज, युग की क्रूर सत्यता को उजागर किया है। उस समाज का चित्रा खींचा है जहाँ सर्वत्रा अत्याचार, अन्याय, अनीति का बोलबाला है। लोभ, मोह, छल, कपट का सर्वत्रा वातावरण है, सम्बन्धें व पारिवारिक मान–मर्यादाओं की दीवार ढह रही थी। कर्तव्यविमुख होकर लोग मनमाने आचरण कर रहे हैं। तुलसी ने 'रामनाम' के स्मरण के माध्यम से कलियुग से छुटकारा पाने का उपाय बताया है। यद्यपि अनेक संदर्भ जैसे वर्णव्यवस्था की स्थापना, शूद्र विषयक तुलसी की अवधरणा, बहुत पीछे पड़ गयी है, आज हमें इसे अस्वीकार करना होगा। पिफर भी विवेक, संयम,

नैतिकता की जो बात तुलसी करते हैं आज भी प्रासंगिक है। तुलसी के अनुसार राम की कथा मंगल करने वाली और कलियुग के पापों को दूर करने वाली है। उनकी भदेस कविता की गति टेढ़ी अवश्य हैं किन्तु गंगा के समान पवित्रा जल वाली है।[xliii]

''मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की''

संदर्भः–

i शुक्ल, रामचंद्र, *गोस्वामी तुलसीदास,* नागरी प्रचारिणी सभा, 1980, पृष्ठ 167

ii त्रिपाठी, विश्वनाथ, *लोकवादी तुलसीदास,* राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974

iii त्रिपाठी, विश्वनाथ, *लोकवादी तुलसी,*राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974, पृष्ठ 84–85

iv पोद्दार, हनुमान प्रसाद, *श्री रामचरितमानस,* उत्तरकाण्ड 97 ;कद्ध, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1940, पृष्ठ 867

v वही, उत्तरकाण्ड 97 ;खद्ध चौपाई ;2द्ध, पृष्ठ 868

vi वही, उत्तरकाण्ड, 97 ;खद्ध चौपाई ;3द्ध पृष्ठ 868

vii वही, उत्तरकाण्ड 97 ;खद्ध चौपाई ;4द्ध, पृष्ठ 868

viii वही, उत्तरकाण्ड 98 ;खद्ध चौपाई ;4द्ध, पृष्ठ 867

ix वही, उत्तरकाण्ड, 98 ;खद्ध चौपाई ;4द्ध पृष्ठ 869

x वही, उत्तरकाण्ड, 99 ;कद्ध पृष्ठ 869

xi वही, उत्तरखण्ड, 97 ;खद्ध चौपाई 1, पृष्ठ 868

xii त्रिपाठी, विश्वनाथ, *लोकवादी तुलसी,* राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली–1974, पृष्ठ 85–86

xiii पोद्दार, हनुमानप्रसाद, श्रीरामचरितमानस, ;उत्तरकाण्डद्ध, दोहा 99 ;खद्ध, चौपाई ;3द्ध, पृष्ठ 870

xiv वही, उत्तरकाण्ड, 99 ;खद्ध, चौपाई ;5द्ध, पृष्ठ 870

xv 'विप्र निरच्छर लोभी कामी। निराचार सठ वृषली स्वामी' पोद्दार, हनुमान प्रसाद, *श्री रामचरितमानस,* उत्तरकाण्ड,दोहा 99 ;खद्ध चौपाई ;4द्ध, गीता प्रेस गोरखपुर, 1940, पृष्ठ 870

xvi पोद्दार, हनुमानप्रसाद, *श्री रामचरितमानस,* ;उत्तरकाण्डद्ध, दोहा 100 ;कद्ध, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1940, पृष्ठ 870

xvii वही, उत्तरकाण्ड दोहा 100 ;खद्ध, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1940, पृष्ठ 870

xviii वही, उत्तरकाण्ड, छन्द ;1द्ध, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1940, पृष्ठ 870

xix वही, उत्तरकाण्ड छन्द 1 और 3, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ 870–71

xx दीक्षित, सूर्यप्रसाद, *तुलसीमत,* सूर्य प्रभा प्रकाशन, दिल्ली, 2009, पृष्ठ 60

xxi पोद्दार हनुमानप्रसाद, *श्री रामचरितमानस,*;उत्तरकाण्डद्ध, दोहा 99 ;खद्ध, चौपाई ;5द्ध, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ 870

xxii दीक्षित, सूर्यप्रसाद, तुलसीदास, सूर्य प्रभा प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 60

xxiii पोद्दार, हनुमानप्रसाद, *श्री रामचरितमानस,*;उत्तरकण्डद्ध, 98 ख, 3, पृष्ठ 869

xxiv वही, उत्तरकाण्ड 98 ;खद्ध चौपाई ;4द्ध, पृष्ठ 869

xxv वही, उत्तरकाण्ड 98 ;खद्ध चौपाई ;4द्ध, पृष्ठ 869

xxvi वही, उत्तरकाण्ड 100 ;खद्ध छन्द ;2द्ध, ;प्रथमपंक्तिद्ध, पृष्ठ 871

xxvii वही, उत्तरकण्ड 100 ;खद्ध छन्द ;2द्ध, पृष्ठ 871

xxviii वही, उत्तरकण्ड 100 ;खद्ध छन्द ;3द्ध, पृष्ठ 871

xxix वही, उत्तरकण्ड 101 ;खद्ध छन्द ;3द्ध, पृष्ठ 872

xxx वही, उत्तरकण्ड, 100 ;खद्ध चौपाई ;3द्ध, पृष्ठ 871

xxxi त्रिपाठी, विश्वनाथ, *लोकवादी तुलसी,* राधकृष्ण प्रकशन, नई दिल्ली, 1974, पृष्ठ 87

xxxii वही, उत्तरकण्ड 100 ;खद्ध चौपाई ;5द्ध, पृष्ठ 871

xxxiii वही, उत्तरकण्ड 101 ;खद्ध, पृष्ठ 871

xxxiv वही, पृष्ठ 87

xxxv शास्त्री, चन्द्रशेखर *'कवितावली'* 81/1–2, साहित्यभवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद 1976,

xxxvi वही, *'कवितावली'* 7/97, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद 1976, पृष्ठ 192

xxxvii वही,पृष्ठ 191

xxxviii त्रिपाठी, विश्वनाथ, *लोकवादी तुलसी,* राधकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ 83

xxxix वही, पृष्ठ 83

xl पोद्दार, हनुमानप्रसाद, श्रीरामचरित मानस, उत्तरकाण्ड, 102 ;खद्ध पृष्ठ 872

xli वही, उत्तरकाण्ड 102 ;खद्ध छन्द चौपाई ;2द्ध, पृष्ठ 873

xlii शास्त्री, चन्द्रशेखर *'कवितावली'* साहित्यभवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद 1976, पृष्ठ 191

xliii त्रिपाठी, विश्वनाथ, *लोकवादी तुलसी,* राधकृष्ण प्रकशन, 1974, पृष्ठ 84

संदर्भ ग्रथ सूची

Primary Sources

- Tulsidas, *Ramcharitmanas,* ed. Hanuman Prasad Poddar, Geeta Press, Gorakhpur, 1940.
- Tulsidas, *Vinaypatrika* ed. Hanuman Prasad Poddar, Geeta Press, Gorakhpur, 1940.
- तुलसीदास, *कवितावली* ;सं.द्ध, चन्द्रशेखर, साहित्यभवन प्रा. लिमिटेड इलाहाबाद, 1976

Secondary Sources (English)

- Goswani, Indira, *Ramayana from Ganga to Brahmaputra*, B.R. Publishing Corporation, Delhi, 1996.
- Khanna, Meenakshi, *Cultural History of Medieval India,* Social Science Press, New Delhi, 2007.
- Pollock, Sheldon (Ed.), *Literary Cultures in History Reconstruction From South Asia,* Brekery University of California Press, 2003.
- Shobha, Savitri Chandra, *Medieval Indian and Hindi Bhakti Poetry: A Socio-Cultural Study*, Haranand Publication, New Delhi, 1996.

हिन्दी स्रोत

- उपाध्याय, रामकिंकर, *मानस मुक्तावली,* विरला अकादमी आर्ट एण्ड कल्चर कलकत्ता, 1974.
- त्रिपाठी, विश्वनाथ, *लोकभारती तुलसी,* राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974.
- तिवारी, अजय, *तुलसीदास एक पुनर्मूल्यांकन,* आधर प्रकाशन, पंचकूला ;हरियाणाद्ध, 2006.
- दीक्षित, सूर्यप्रसाद, *तुलसीमत,* सूर्य प्रभा प्रकाशन, दिल्ली 2009
- मिश्र, अरुण प्रकाश, *तुलसी का मानववाद,* अंकुर प्रकाशन दिल्ली, 1987

RRIJM 2015, All Rights Reserved

- वुल्पफे, पफादर कॉमन, *मानसकौमुदी,* अनुपन प्रकाशन, पटना, 1988
- शर्मा, शारदा प्रसाद, *रामचरितमानसःतत्त्व–दर्शन और लोक चेतना,* हिन्दी साहित्य संसद, बम्बई, प्रथम संस्करणः 1981.
- शुक्ल, रामचंद्र, *गोस्वामी तुलसीदास,* नागरी प्रचारिणी, वाराणसी, 1980.
- श्री शरण, तुलसीदास व्यक्तित्व और कृतित्व, आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2002.

RRIJM 2015, All Rights Reserved